गौतम बुद्ध महाविद्यालय

सम्बद्ध-सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर

पचपेड़वा, सांगठ, संतकबीर नगर (उ.प्र.)

(शिक्षा संकाय)

(शिक्षण की विधियाँ और सिद्धान्त)

~~प्रोजेक्ट फाइल~~

सत्र : 2025-2026

B.E.D- ~~FIRST YEAR~~, SECOND YEAR.

Assignment

PRINCIPLES AND METHODS OF TEACHING

छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका का नाम Principles and Methods of Teaching.

शिक्षण विषय Assignment

महाविद्यालय अनुक्रमांक Bed- 2 year

विश्वविद्यालय द्वारा आवंटित अनुक्रमांक

Question-1 Elucidate the Components of the Basic teaching Model and emphasize its Utility in building effective Lesson plans.

(बुनियादी शिक्षा मॉडल के घटकों को स्पष्ट करें और प्रभावी पाठ योजनाएं बनाने में इसकी उपयोगिता की व्याख्या करें।)

अमेरिकी मनोवैज्ञानिक रॉबर्ट ग्लेजर द्वारा 1962 में विकसित किया गया बेसिक टीचिंग मॉडल (बीटीएम) एक मूलभूत मनोवैज्ञानिक ढांचा है जो शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को चार परस्पर संबंधित घटकों में विभाजित करता है। यह इस मान्यता पर आधारित है कि शिक्षण एक विशिष्ट उद्देश्यपूर्ण गतिविधि है जिसका लक्ष्य छात्रों के अधिगम को मापने योग्य स्तर तक पहुँचाना है।

रॉबर्ट ग्लेजर के 1962 के बुनियादी शिक्षण मॉडल में शिक्षण अधिगम से जोड़ने के लिए डिजाइन किए गए चार मुख्य अनुक्रमिक घटक शामिल है:

1. अनुदेशात्मक उद्देश्य
2. प्रारम्भिक व्यवहार
3. अनुदेशात्मक प्रक्रियाएं
4. प्रदर्शन मूल्यांकन

उपर्युक्त चक्रीय मॉडल यह सुनिश्चित करता है कि मूल्यांकन से प्राप्त प्रतिक्रिया अनुदेशात्मक उद्देश्यो और प्रक्रियाओं को लगातार परिष्कृत करती रहे।

इसका व्यापक रूप से संरचित, लक्ष्य उन्मुख शिक्षण तैयार करने के लिए उपयोग किया जाता है जिसे अक्सर 'कक्षा बैठक मॉडल' कहा जाता है।

∴ बुनियादी शिक्षण मॉडल के घटक ∴

यह मॉडल एक रैखिक और सतत चक्र की रूपरेखा प्रस्तुत करता है जिनमें निम्नलिखित भाग शामिल हैं:

1. शिक्षणात्मक उद्देश्य (ए):

यह प्रक्रिया स्पष्ट, मापने योग्य और अवलोकन योग्य लक्ष्यों को परिभाषित करने से शुरू होती है जिन्हे शिक्षार्थियों को शिक्षण इकाई पूरी करने पर प्राप्त करना चाहिए। ये उद्देश्य विषयवस्तु और शिक्षण विधियो के चयन में मार्गदर्शन करते हैं।

2. प्रारंभिक व्यवहार (बी):

इसमें शिक्षण शुरू होने से पहले विद्यार्थी के पूर्वज्ञान, कौशल और वर्तमान समझ के स्तर का आकलन करना शामिल है। यह सुनिश्चित करता है कि शिक्षण उचित स्तर से शुरू हो ताकि उनकी वर्तमान स्थिति और लक्ष्य के बीच के अंतर को पाटा जा सके।

3. शिक्षणात्मक प्रक्रियाएँ (सी):

यह सक्रिय चरण है जहाँ शिक्षक विशिष्ट रणनीतियों, शिक्षण सहायक सामग्री और विधियों का उपयोग करके शिक्षार्थियो को उनके प्रारम्भिक व्यवहार से वांछित अधिगम परिणामों

की ओर निर्देशित करता है। यह शिक्षण का तरीका है।

4. प्रदर्शन मूल्यांकन (डी):

अंतिम घटक शिक्षार्थी के अंतिम व्यवहार (अंतिम प्रदर्शन) का विश्लेषण करके यह मूल्यांकन करता है कि उद्देश्यों की पूर्ति हुई या नहीं। यह एक फीडबैक लूप प्रदान करता है, जिससे यह निर्धारित होता है कि शिक्षण प्रक्रियाएं प्रभावी थी या उनमें संशोधन की आवश्यकता है।

यह मॉडल इस बात पर जोर देता है कि सभी चार घटक आपस में जुड़े हुए है; प्रदर्शन मूल्यांकन एक प्रतिक्रिया तन्त्र के रूप में कार्य करता है जिससे शिक्षक भविष्य में सीखने में सुधार के लिए उद्देश्यों या शिक्षण प्रक्रियाओं को संशोधित कर सकता है।

प्रभावी पाठ योजनाएँ बनाने में उपयोगिता

बुनियादी शिक्षण मॉडल अमूर्त शैक्षिक लक्ष्यों को ठोस, व्यावहारिक और प्रभावी पाठ योजनाओं में बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

- लक्ष्य-उन्मुख योजना:

शिक्षण उद्देश्यों से शुरुआत करके 'शिक्षक' यह सुनिश्चित करते है कि प्रत्येक पाठ का एक स्पष्ट, मापने योग्य उद्देश्य हो।

इससे लक्ष्यहीन शिक्षण से बचा जा सकता है और यह सुनिश्चित होता है कि गतिविधियां सीधे सीखने के लक्ष्यों में योगदान दें।

- विद्यार्थी - केन्द्रित दृष्टिकोण :

प्रारम्भिक व्यवहार पर जोर देने से यह सुनिश्चित होता है कि पाठ पूर्व निर्धारित स्क्रिप्ट पढ़ाने के बजाए छात्रों की वास्तविक जरूरतों, पूर्व ज्ञान और क्षमताओं के अनुरूप तैयार किए जाते है।

- व्यवस्थित संरचना :

यह मॉडल एक स्पष्ट 'सिंटेक्स या अनुक्रम प्रदान करता है - उद्देश्य - प्रवेश - व्यवहार - प्रक्रियाएं - मूल्यांकन - जो शिक्षको को अपनी सामग्री और विषयवस्तु को व्यवस्थित रूप से व्यवस्थित करने में मदद करता है।

- संरचनात्मक, सुसंगति को आगे बढ़ाता है :

यह गतिविधियों के तार्किक अनुक्रम को बाध्य करता है। यह सुनिश्चित करता है कि कक्षा में जो कुछ भी होता है वह सीधे उद्देश्यों की प्राप्ति की ओर ले जाता है, जिससे 'मै करता हूँ, हम करते है, आप करते है' दृष्टिकोण को बढ़ावा मिलता है।

- डेटा - आधारित निर्णय लेने में सुविधा प्रदान करता है :

ए प्रदर्शन - मूल्यांकन घटक इस बात पर जोर देता है कि मूल्यांकन केवल ग्रेडिंग के लिए नही है बल्कि सामग्री को आगे बढ़ाने या फिर से पढ़ाने

के बारे में डेटा एकत्र करने के लिए है।

- सतत सुधार (फीडबैक) को प्रोत्साहित करता है: मॉडल की चक्रीय प्रकृति (फीडबैक लूप का उपयोग करते हुए) का अर्थ है कि पाठ योजनाएं कठोर दस्तावेज नहीं है बल्कि जीवंत अनुकूलनीय संरचनाएं हैं जिन्हे छात्र प्रदर्शन के आधार पर सुधारा जा सकता है।

- शिक्षको के आत्मविश्वास को बढ़ाता है: एक संरचित 4-चरणीय ढांचा होने से अंतिम समय का तनाव कम हो जाता है, जिससे शिक्षक कक्षा प्रबंधन के लिए अधिक आत्म विश्वास और तैयारी महसूस कर पाते है।

निष्कर्ष: उपर्युक्त मॉडल का उपयोग करके शिक्षक ऐसे पाठ योजना तैयार कर सकते है जो व्यवस्थित वैज्ञानिक और शिक्षार्थी की वास्तविक उपलब्धि पर केन्द्रित हो। इस मॉडल को लागू करने से शिक्षक केवल 'विषयवस्तु प्रदान करने से' आगे बढ़कर छात्रो के सीखने की प्रक्रिया को सुगम बनाने और उसका मूल्यांकन करने लगते है, जिसके परिणामस्वरूप शैक्षिक परिणाम बेहतर होते है।

मूल शिक्षण मॉडल जिसे मुख्य रूप से रॉबर्ट ग्लेजर ने 1962 में विकसित किया था, एक मूलभूत मनोवैज्ञानिक ढांचा है जिसे शिक्षण

प्रक्रिया को संरचित करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह शिक्षण को एक व्यवस्थित दृष्टिकोण प्रदान करता है जिसमें सिखाई जाने वाली सामग्री को शिक्षण विधि और मूल्यांकन के तरीके से जोड़ा जाता है। यहाँ इसके चार प्रमुख घटकों और पाठ योजना में इसकी उपयोगिता को स्पष्ट कर दिया है। यह मॉडल शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को चार परस्पर संबंधित अनुक्रमिक भागों में विभाजित करता है जिसमें निरन्तर सुधार के लिए फीडबैक लूप शामिल होते है।

इसमें शिक्षणात्मक उद्देश्य (क्या), व्यवहार का प्रारम्भिक स्तर (कहाँ से), शिक्षणात्मक प्रक्रियाए (तरीका), प्रदर्शन मूल्यांकन (कितना अच्छा) जैसे सम्युक्त घटक, बुनियादी शिक्षा माडल (द्वारा राबर्ट ग्लेजर) की उपयोगिता और प्रासंगिकता को अभिव्यक्त करते है।

stion.

Describe in detail the historical Context of the establishment of the Radhakrishnan Commission (19

Write a Comparative analysis of the memory, understanding, and reflective levels of teaching and elaborate on their Utility within the educational Context.

(शिक्षण के स्मृति, समझ और चिंतन स्तरों का तुलनात्मक विश्लेषण लिखें और शैक्षिक सन्दर्भ में उनकी उपयोगिता पर विस्तार से चर्चा करें।)

शिक्षण का प्रत्यय अधिक जटिल होता है। यह एक सामाजिक प्रक्रिया है इसलिए शिक्षण का कोई सर्वमान्य सिद्धान्त तथा व्यापक परिभाषा नही दी जा सकती है। सामाजिक तथ्य शिक्षण को प्रभावित करते है। सामाजिक तथ्य और मानवीय घटक परिवर्तनशील होते है और शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के लिए तथा सामाजिक नियन्त्रण के लिए कारक मानी जाती है।

शिक्षण के तीन मुख्य स्तर-

स्मृति (MEMORY), समझ (Understanding) और चिंतन (Reflective)- क्रमशः रटने, बोध और आलोचनात्मक सोच को विकसित करते है। स्मृति स्तर (हर्बर्ट) प्राथमिक ज्ञान, समझ स्तर (मॉरिसन) अर्थ और संबंधों तथा चिंतन स्तर (हंट) समस्या-समाधान पर केन्द्रित है। यह शिक्षक-

केन्द्रित से छात्र-केन्द्रित प्रक्रिया की ओर बढ़ता है जो सर्वोच्च संज्ञानात्मक विकास सुनिश्चित करता है।

उपर्युक्त संदर्भ में निम्नांकित चार्ट से आसानी से समझा जा सकता है-

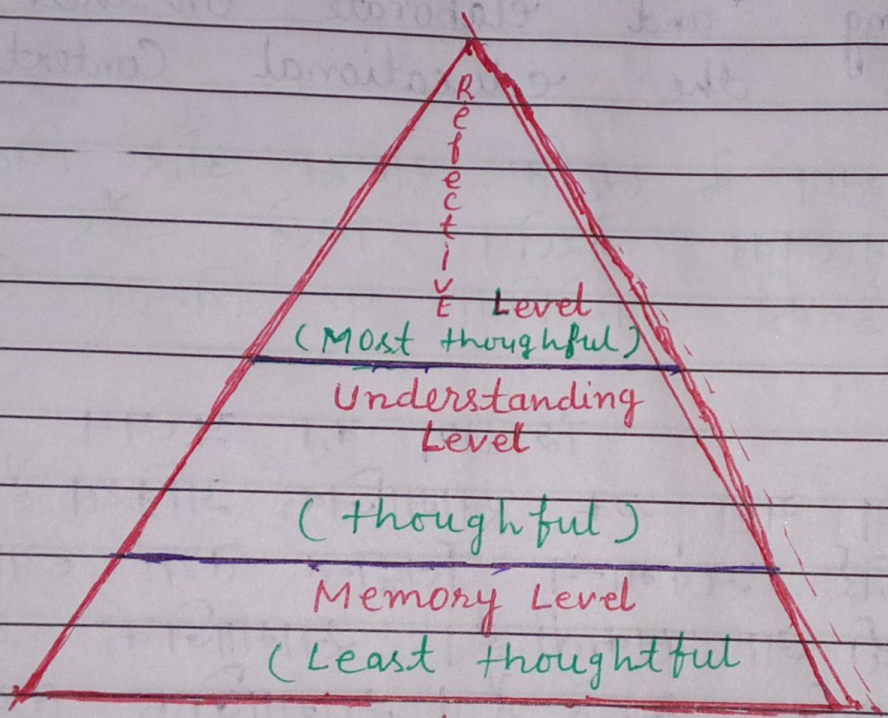

Levels of Teaching
(शिक्षण के स्तर)
का चार्ट

(Chart of Levels of teaching)

ॐ शिक्षण के स्तरो का तुलनात्मक विश्लेषण ॐ

आधार (BASE)	स्मृति स्तर (MEMORY LEVEL)	समझ स्तर (UNDERSTANDING LEVEL)	चिंतन स्तर (REFLECTIVE LEVEL)
मुख्य उद्देश्य	तथ्यों को याद करना (रटना)	अवधारणाओं को समझना और संबंध जानना।	समस्या-समाधान और आलोचनात्मक सोच
प्रतिपादक	हरबर्ट (Herbert)	मॉरीसन (Morrison)	हंट (Hunt)
शिक्षक की भूमिका	प्रमुख (Dominant)	मार्गदर्शक (Guide)	लोकतांत्रिक/ सुविधादाता
शिक्षार्थी की भूमिका	निष्क्रिय (Passive)	सक्रिय (Active)	अत्यधिक सक्रिय और स्व-प्रेरित
मानसिक प्रक्रिया	निम्न (केवल मानसिक रटना)	मध्यम (विश्लेषण और बोध)	उच्च (तर्क, अन्वेषण, सृजन)
मूल्यांकन पद्धति	मौखिक/लिखित परीक्षा (तथ्य-आधारित)	निबंध, व्याख्या (अर्थ-आधारित)	केस स्टडी, प्रोजेक्ट अनुसंधान
उपयुक्तता	छोटे बच्चों के लिए	माध्यमिक/उच्च माध्यमिक	विश्वविद्यालय/ वयस्क शिक्षार्थी

ः विस्तृत विश्लेषण ः

1- स्मृति स्तर (Memory Level)ः

- यह सबसे प्रारम्भिक स्तर है जहाँ रटने पर जोर दिया जाता है।
- इसमें तथ्यों, नियमो, और सूचनाओं को याद किया जाता है।
- हरबर्ट इसके मुख्य प्रस्तावक है।

2- ः समझ स्तर ः (Understanding Level)

- यह स्मृति स्तर से उच्च है, जहाँ जानकारी के अर्थ, अनुप्रयोग और उदाहरणों के माध्यम से 'समझ' विकसित की जाती है।
- इसमें विद्यार्थी तथ्यों के बीच संबंध स्थापित करना सीखते है।
- मॉरीसन ने इस मॉडल को विकसित किया।

~~3. चिंतन~~

3. : चिंतन स्तर :
(: Reflective Level :)

- यह शिक्षण का सर्वोच्च स्तर है।
- यह पूरी तरह से छात्र-केन्द्रित होता है।
- हंट द्वारा विकसित यह स्तर आलोचनात्मक सोच, समस्या-समाधान और स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता विकसित करता है।

: निष्कर्ष :
: CONCLUSION :

शिक्षण की प्रक्रिया रटने (Memory) से शुरु होकर समझने (Understanding) से होती हुई, समस्या का समाधान खोजने (Reflective) तक पहुँचती है। एक प्रभावशाली शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के लिए इन तीनों स्तरों का क्रमबद्ध उपयोग आवश्यक है।

PTO

: शैक्षिक सन्दर्भ में शिक्षण स्तरों (स्मृति, समझ, चिन्तन) की उपयोगिता :

शैक्षिक सन्दर्भ में शिक्षण स्तरो (स्मृति, समझ, चिन्तन) की उपयोगिता छात्रों के मानसिक विकास को चरणबद्ध तरीके से सुनिश्चित करने में है। यह शिक्षको को रटने के बजाए वैचारिक स्पष्टता, आलोचनात्मक सोच और स्वतन्त्र समस्या-समाधान विकसित करने में मदद करता है। यह एक व्यवस्थित सीखने की प्रक्रिया के रुप में ज्ञान को दीर्घकालिक और व्यावहारिक बनाता है।

शिक्षण स्तरों (Levels of teaching) की मुख्य उपयोगिता निम्न लिखित है:-

- **स्मृति स्तर (Memory level - हर्बर्ट) :**

  यह प्रारम्भिक अवस्था है जहाँ तथ्यों को याद करने और मानसिक क्षमताओं को प्रशिक्षित करने पर जोर दिया जाता है।

- **समझ स्तर (Understanding Level - मॉरिसन) :**

  यह स्तर छात्रों को तथ्यो के अर्थ, उनके प्रयोग और संबंधो को समझने में मदद करता है जिससे ज्ञान अधिक टिकाऊ बनता है।

- चिन्तनशील / विमर्शी स्तर (Reflective Level) :-
यह उच्चतम स्तर है जो छात्रों में समस्या-समाधान, आलोचनात्मक सोच, सृजनात्मकता और मौलिक चिन्तन विकसित करता है जहाँ वे समस्याओं का स्वतन्त्र रूप से समाधान करते है।

:- शैक्षिक महत्व :-
:- Educational Importance :-

- व्यवस्थित अधिगम (Systematic Learning) :-
यह पाठ्यक्रम को सरल से जटिल (स्मृति से चिन्तन) के क्रम में व्यवस्थित करता है।

- छात्र-केन्द्रित दृष्टिकोण :-
यह शिक्षार्थी की मानसिक क्षमता के अनुसार शिक्षण विधि चुनने में सहायक है।

- शिक्षण में प्रभावशीलता :-
शिक्षक इन स्तरो के आधार पर उपयुक्त शिक्षण सामग्री (TLM) और रणनीतियों का उपयोग कर सकते है।

- सतत मूल्यांकन :-
यह जानने में मदद करता है कि छात्र रट रहे है या वास्तव में विषय को समझ रहे है।

ः निष्कर्ष ः
ः CONCLUSION ः

शिक्षण के स्तर का अर्थ है

शिक्षण के स्तर का अर्थ है स्मृति, समझ और चिन्तन के माध्यम से छात्रों की परिपक्वता के अनुसार ज्ञान देना। यह एक सुनियोजित प्रक्रिया है जो सरल से जटिल की ओर ले जाती है। छात्रों में आलोचनात्मक सोच विकसित करती है रटने की प्रवृत्ति कम करती है और उनके सर्वांगीण (संज्ञानात्मक, भावनात्मक) विकास में सहायक है।

ः शिक्षण स्तर की विविध उपयोगिता ः

शिक्षण स्तर की अन्य विविध उपयोगिता को इस प्रकार अभिव्यक्त कर सकते हैं ः

- शिक्षण का चरणबद्ध विकास :-
  यह शिक्षण को सरल से जटिल की ओर ले जाता है जिससे सीखना आसान हो जाता है।

- छात्रों की आवश्यकता के अनुरूप :-
  शिक्षक छात्रों की मानसिक परिपक्वता और आयु के अनुसार शिक्षण विधियों को चुन सकते है।

- गहरी समझ और ज्ञान :-
  यह रटकर तथ्यों को रटने के बजाए अवधारणाओं की गहरी समझ विकसित करती है।

- आलोचनात्मक और रचनात्मक सोच :-
  यह विद्यार्थियों में तर्क करने, विश्लेषण करने और नई जानकारी खोजने की क्षमता बढ़ाता है।

- व्यावहारिक अनुप्रयोग :-
  यह छात्रों में व्यावहारिक उपागमो को विकसित करता है।

- सकारात्मक व्यवहार परिवर्तन :-
  यह छात्रो के व्यवहार में सकारात्मक और रचनात्मक बदलाव लाने में मदद करता है।

- आजीवन सीखना (Life long learning)

यह छात्रों में आत्मनिर्भर सीखने की आदत विकसित करता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विभिन्न शिक्षण स्तर छात्रों के सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास के लिए अपरिहार्य है तथा इनकी प्रासंगिकता एवं उपादेयता स्वयं सिद्ध है।